लहू की वाचा

फ्रैंकलीन द्वारा नोट्स

आदम के पाप में पड़ने के समय से हम इस बात को सीखते हैं कि लहू कितना बहुमूल्य और वाचा में महत्वपूर्ण है।

उत्पत्ति 3:21 और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के अंगरखे बनाकर उनको पहिना दिए।

- परमेश्वर ने दूसरे के जीवन को दिया – लहू बहाया गया – ताकि मनुष्य के पाप ढांप लिए जाएं

लैव्यव्यवस्था 17:11 क्योंकि **शरीर का प्राण लहू में रहता है**; और उसको मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है, कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए; क्योंकि **प्राण** के कारण **लहू** ही से प्रायश्चित्त होता है।

- आदम ने यह पाठ तब सीखा जब उसने पाप किया।

लैव्यव्यवस्था 17:1*4* क्योंकि शरीर का **प्राण जो है वह उसका लहू** ही है।

- पाप का परिणाम तो मृत्यु है (रोमियों 6:23) तथा आदम के पाप को ढांपने के लिए लहू का बलिदान दिया गया। आदम ने इस महत्वपूर्ण पाठ को सीखा तथा उसने इसे अपने पुत्रों को भी सिखाया, जिसे हम हाबिल के बलिदान में देखते हैं।

उत्पत्ति 4:2–5 कैन और हाबिल

(3) कुछ दिनों के पश्चात् कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया। (4) और हाबिल भी अपनी भेड़–बकरियों के कई एक **पहिलौठे** बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई; तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया, (5) परन्तु कैन और उसकी भेंट को उस ने ग्रहण न किया।

हाबिल ने वैसा ही **लहू बलिदान** अर्पित किया जैसा परमेश्वर ने उसके पिता आदम को सिखाया था। यह उसकी जान के बदले में था, जो इस बात की घोषणा कर रहा था कि उसके पापों के लिए लहू बहाए जाने की आवश्यकता है। हाबिल ने परमेश्वर की उस तरह से आराधना की जैसी परमेश्वर को चाहिए।

कैन ने ऐसा नहीं किया। उसने परमेश्वर की आराधना उस प्रकार से की जैसा उसको भाया – अपने प्रयास कार्य के द्वारा, अपने हाथों के कार्य के द्वारा। यह धर्म है – मनुष्य इस बात को निर्धारित करता है कि परमेश्वर कौन है तथा कैसे उसकी आराधना करनी चाहिए।

- पूरे पवित्र शास्त्र में हमें सिखाया गया है कि : और यह **धर्म के कामों** के कारण नहीं, जो **हम ने आप किए**, पर अपनी दया के अनुसार। तीतुस 3:5

- ***उद्धार यहोवा ही की ओर से होता है*** भजन संहिता 3:8

वाचा और इब्राहीम

उत्पत्ति 15 का पूरा अध्याय पढ़ें

उत्पत्ति 15: 1–5 इब्राहीम के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं
पद 6 उस ने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना।(इब्रानी भाषा में "विश्वास" का अर्थ है – दूसरों के प्रति विश्वासयोग्य रहने की अपनी अप्रतिबन्धित वचनबद्धता – इब्राहीम की वचनबद्धता। यह वाचा के लिए आवश्यक है।)

पद (10) तब **इन सभों** को लेकर, उस ने बीच में से दो टुकडे कर दिया,

जानवरों को बीच से दो टुकड़े करना और लहू उण्डेला जाना, **लहू की वाचा** थी। यह इब्राहीम को की गई प्रतिज्ञाओं के प्रति परमेश्वर की **अप्रतिबन्धित वचनबद्धता** थी। यह मृत्यु तक जीवन की वचनबद्धता है।

अपने स्वयं के जीवन से प्रतिज्ञाओं को पूरी करने की वचनबद्धता है। तथा यह यीशु मसीह के लहू बहाए जाने में उसने किया।

उत्पत्ति 17 (13 वर्षों के बाद) **खतना की वाचा**

पद 1–8 इब्राहीम के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं

पद 10–11 **मेरे साथ** बान्धी हुई **वाचा,** जिसका पालन **तुझे** और **तेरे पश्चात् तेरे वंश को** करना पड़ेगा, सो यह है, कि तुम में से एक एक पुरूष का **खतना** हो। तुम अपनी अपनी खलड़ी का खतना (लहू बहाया जाना) करा लेना; जो **वाचा** मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही **चिन्ह** होगा।

- **मेरे साथ** बान्धी हुई **वाचा,** जिसका पालन **तुझे** और **तेरे पश्चात् तेरे वंश को** करना पड़ेगा,

  रोमियों 4:16 इसी कारण **प्रतिज्ञा** अनुग्रह के अनुसार विश्वास से मिलती है जिससे कि **सब वंशजों के लिए** वह निश्चित हो जाए, न कि केवल उसके लिए जो व्यवस्थावाला है परन्तु उनके लिए भी जो **अब्राहम के समान विश्वासवाले** हैं, वही तो **हम सब का पिता** है।
  देखें गलतियों 3:7,9,14

- तुम अपनी अपनी खलड़ी का खतना (लहू बहाया जाना) करा लेना; जो **वाचा** मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही **चिन्ह** होगा।

  "वाचा का चिन्ह" जिसमें और जिसके द्वारा वह पिता बना और उसके वंशज हुए जिससे कि **सब वंशजों के लिए** वह निश्चित हो जाए,

- ✎ अब्राहम की सन्तान (वंशज) परमेश्वर की हैं।
- ✎ प्रजनन तथा संतान उत्पन्न करने की क्रिया "पवित्र" क्रिया है।

स्त्री और पुरुष के बीच होने वाली पहली विवाह की क्रिया में लहू बहता है और इस प्रकार विवाह की वाचा संपन्न होती है।

इब्रानियों 13:4 ***विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।***

- ***विवाह सब में आदर की बात समझी जाए*** "सम्मानीय" या सबसे उच्च श्रेणी का विशेष आदर
- ***परमेश्वर न्याय करेगा*** क्योंकि यह लहू की वाचा को तोड़ते हैं।

नए नियम में खलड़ी के खतने को "हृदय के खतने" से बदल दिया गया है (गलातियों 6:15; फिलिप्पियों 3:3; कुलुस्सियों 2:11)।

वाचा के साथ के मूसा के अनुभव:

निर्गमन 4:21–26 मूसा ने अपने पहलौठे का खतना नहीं किया था। तथा वह परमेश्वर के राजदूत के रुप में वाचा रहित मिस्रियों के पहलौठों के बारे में चिताने फिरौन के पास जा रहा था।

पद 24 परमेश्वर मूसा से मिलता है और उसे मार डालना चाहता है।

- उसने वाचा की ज़रुरतों को पूरा न करके उसे तोड़ा था।
- यह इस बात को प्रदर्शित करता है कि परमेश्वर के लिए वाचा **कितना गंभीर विषय** है।

पद 25–26 ***तब सिप्पोरा ने एक तेज चकमक पत्थर लेकर अपने बेटे की खलड़ी को काट डाला, और मूसा के पावों पर यह कहकर फेंक दिया, कि निश्चय तू लहू बहानेवाला मेरा पति है। तब उस ने उसको छोड़ दिया। और उसी समय खतने के कारण वह बोली, तू लहू बहानेवाला पति है*** – खतने के कारण।

सिप्पोरा मिद्यानी थी तथा उसने अपने कार्यों के द्वारा वाचा के अत्यन्त आवश्यकता को तथा महत्व को नहीं समझा या सराहा।

यह उदाहरण है : 1 कुरिन्थियों 7:14 ***क्योंकि ऐसा पति जो विश्वास न रखता हो, वह पत्नी के कारण पवित्र*** (अलग किया गया) ***ठहरता है, और ऐसी पत्नी जो विश्वास नहीं रखती, पति के कारण पवित्र*** (अलग की गई) ***ठहरती है; नहीं तो तुम्हारे*** सन्तान ***अशुद्ध*** होती, ***परन्तु अब तो पवित्र*** (अलग किए गए – वही शब्द जो ऊपर कहे गए) ***हैं।***

इसका अर्थ है: जो अविश्वासी है और जो उनके बच्चे हैं दोनो "विवाह की वाचा" के द्वारा, जो उन्होंने विश्वास करने वाले के साथ, "जो वाचा में हैं" बान्धी, प्रभु में सुरक्षित किए गए तथा "अलग किए गए" हैं।

नई वाचा :

लूका 22:19–20 ***फिर उस ने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उन को यह कहते हुए दी, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये दी जाती है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो" । इसी रीति से उस ने*** भोजन के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया, " यह कटोरा ***मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है" ।***

1 कुरिन्थियों 10:16–17 *वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या* ***मसीह के लहू की सहभागिता नहीं****? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या* ***मसीह की देह की सहभागिता*** *नहीं*? (17) ***इसलिये, कि एक ही रोटी है सो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं: क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं ।***

पूर्वी प्रथाओं और बाइबल की शिक्षाओं में भी "**रोटी** की वाचा" और "**लहू** की वाचा" दो भिन्न वाचाएं हैं।

- रोटी की वाचा युद्धविराम प्राप्त कर के **शान्ति–मेल** लाती है।
- लहू की वाचा स्थायी तौर से **एक बनाती है, दो को एक बनाने वाला सम्बन्ध**

प्रतीकात्मक रीति से, एक मित्रता लाता है तथा दूसरा सम्बन्ध देता है।

- **रोटी की वाचा,** अतिथि–सत्कार का संकल्प करता और उसे प्रदर्शित करता है, और यह किसी को उस परिवार या जाति समुह में जोड़ देता है जो उसके साथ वाचा बनाते हैं।
  उत्पत्ति 14:18–20 ; 18:4–5; 43:32; निर्गमन 29:31–34

- लहू की वाचा निजी और व्यक्तिगत है, जीवन के लिए जीवन।

रोटी की वाचा:
बाइबल और संसार के इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, कि जब दलों में सहमति हो जाती है तो वे मिलकर भोजन में हिस्सा लेते हैं। इस भोज में सहमति और मित्रता का भाव होता है।

- उत्पत्ति 31:54 में याकूब और लाबान हमें वाचा के भोज का एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जिसके कारण दो विरोधी दलों में शान्ति–मेल हो जाता है।

उदाहरण :

मैं यरुशलेम के पुराने शहर की दुकान में गया जिसका मालिक एक मुसलमान था। मैने उसे बताया कि उनकी रोटी मुझे बहुत पसन्द है। उसने तुरन्त अपने बेटे को भेज कर रोटी मंगवा ली और मुझे दे दी। मैं उसका बहुत शुक्रगुज़ार हुआ और उसे भी रोटी खाने के लिए पेश कर दी। इस प्रस्ताव को उसने बड़ी दृढ़ता से मना कर दिया। बाद में मुझे पता चला कि जिसे वे काफिर समझते हैं उसके साथ वे कभी रोटी तोड़कर मेल की वाचा स्थापित नहीं कर सकते।

लहू की वाचा

डैरेक प्रिंस एक सत्य घटना के विषय में बताते हैं जो 1948 में घटी जब इस्राएल राष्ट्र अस्तित्व आया था और इस्राएल के आस–पास मुसलमानों तथा यहुदियों के बीच लड़ाई छिड़ गई।

(इस सत्य घटना को हम "ओ यरुशलेम" नामक किताब के अध्याय 29 में पाते हैं।)

एक यहुदी पुनर्वास इलाके पर यरदन की सेना ने आक्रमण किया तथा उसे पूर्ण रीति से नष्ट कर दिया। केवल कुछ यहुदियों को बन्दी बनाया गया। उन में से एक जवान यहुदी स्त्री "एलीसा" थी। मुस्लीम सैनिकों ने उसे बलत्कार करने का प्रयास किया। जैसे ही वे उसके कपड़ों को फाड़ने के लिए बढ़े कुछ अजीब सी बात हुई। एक अरब अफसर आया और उसने दो सैनिकों को गोली से मार गिराया, फिर उसने अपनी जेब से रोटी का एक टुकड़ा निकाला और इस यहुदी स्त्री को दिया और कहा, "इसे खाओ।" जब उसने रोटी खा ली, उसने कहा, "अब तुम मेरी सुरक्षा में हो। कोई तुम्हारी हानि नहीं पहुंचाएगा।"

क्यों? उसने उसकी रोटी खाई जिसके द्वारा उसके साथ उसने स्पष्ट सम्बन्ध की वाचा को स्थापित किया। युद्ध और वासना की तीव्रता में भी उन मुसलमान सैनिकों ने उस वाचा के सम्बन्ध का आदर किया और उस जवान यहुदी स्त्री का भी।

एक बार जब उस अफसर और स्त्री के बीच में **रोटी तोड़ी गई,** वे सब उस पवित्र वाचा के चिन्ह के द्वारा बाध्य हो गए कि:

- उसको कोई हानि या नुकसान न पहुंचाए
- परन्तु उसकी रक्षा करें और उस नए सम्बन्ध का आदर करे

जब दो जन लहू की वाचा में प्रवेश करते हैं :

1. वे एक हो जाते हैं : एक लहू / एक प्राण

   यूहन्ना 17:20 ... ***जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे,*** (21) ***कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों।***

   फिलिप्पियों 1:21 ***क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है***– इसका अर्थ है : दो एक हैं।

2. विश्वासयोग्य, निष्ठावान लोग अपने वचन और/या प्रतिज्ञाओं को रखते व उसे पूरा करते हैं।

   इब्रानियों 13:5 ***मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।***

3. वे दूसरों के लिए जीते और दूसरों के लिए मरते हैं। यशायाह 53

   रोमियों 5:8 ... मसीह हमारे लिए मरा।

4. एक की ज़रुरतें, दोनो की ज़रुरतें होती है।

   रोमियों 8:32 ***जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?***

5. जो कुछ एक का है, वह दूसरे का भी है

रोमियों 8:17 ***और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, बरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं***

- वह पाप बन गया, हम धर्मी बन गए (रोमियों 3:22; 2 कुरिन्थियों 5:21)

6. एक का शत्रु, दोनो का शत्रु है।

विवाह लहू की वाचा है – मलाकी 2:13 –17

(13) *फिर तुम ने यह दूसरा काम किया है कि तुम ने यहोवा की वेदी को रोनेवालों और आहें भरनेवालों के आंसुओं से भिगो दिया है, यहां तक कि* ***वह तुम्हारी भेंट की ओर दृष्टि तक नहीं करता, और न प्रसन्न होकर उसको तुम्हारे हाथ से ग्रहण करता है।*** *तुम पूछते हो, ऐसा क्यों ?* (14) *इसलिये, क्योंकि* ***यहोवा*** *तेरे और तेरी उस जवानी की संगिनी और ब्याही हुई स्त्री के बीच* ***साक्षी*** *हुआ था जिस का* ***तू ने विश्वासघात किया है।*** (15) *क्या उस ने एक ही को नहीं बनाया जब कि और आत्माएं उसके पास थीं? और एक ही को क्यों बनाया? इसलिये कि वह परमेश्वर के योग्य सन्तान चाहता है। इसलिये तुम अपनी आत्मा के विषय में चौकस रहो, और तुम में से कोई* ***अपनी जवानी की स्त्री से विश्वासघात न करे*** । (16) *क्योंकि* इस्राएल *का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि मैं स्त्री–त्याग से घृणा करता हूं, और उस से भी जो अपने वस्त्र को उपद्रव से* ढांपता है। इसलिए तुम अपनी आत्मा के विषय में चौकस रहो और विश्वासघात मत करो। (17) *तुम लोगों ने अपनी बातों से यहोवा को उकता दिया है। तौभी पूछते हो, कि हम ने किस बात में उसे उकता दिया ? इस में, कि तुम कहते हो कि जो कोई बुरा करता है, वह यहोवा की दृष्टि में अच्छा लगता है, और वह ऐसे लोगों से प्रसन्न रहता है, और यह, कि न्यायी परमेश्वर कहां है?*

✐ परमेश्वर ने स्त्री को इस रीति से सृजा है कि विवाह की पहली क्रिया में योनिच्छद फट जाता है और लहू बहता है, और इस प्रकार यह वाचा को पूर्ण करता है।

व्यवस्थाविवरण 22:13–21 आज के दिन तक पूर्व में लहू के दाग दिखाए जाते हैं जो इस बात का प्रमाण है कि विवाह की वाचा पूरी हुई और उसमें पवित्रता है।

उत्पत्ति 2:24 *इस कारण* पुरुष *अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बनें रहेंगे।*

एक तन, वाचा की भाषा है जहां "दो एक हो जाते हैं।"

मत्ती 19:5–6 *कि इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे?* (6) *सो वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं: इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।*

मत्ती 5:32 *परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से* ***छोड़ दे****, तो वह उस से व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है।।*

- यह विवाह वाचा की दीर्घकालीनता को प्रकट करता है

- व्यभिचार के लिए पुराने नियम के शब्द का अर्थ है "धर्म त्याग देना" – वाचा को तोड़ना।

- लैव्यव्यवस्था 20:10–21 व्यभिचार में पड़े हुए जन लहू के दोषी है तथा:
  " वे निश्चय मार डाले जाएं, उनका खून उन्हीं के सिर पर पड़ेगा।"

- यदि वाचा टूट जाए तो क्या होगा? उदाहरण: दाऊद और बतशेबा

2 शमूएल 12:13–15 ***तब दाऊद ने नातान से कहा, मैं ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। नातान ने दाऊद से कहा, यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया है।; तू न मरेगा । तौभी तू ने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है, इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही मरेगा।***

1 यूहन्ना 1:9 ***यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और** धर्मी **है।***

लहू का वाचा के कारण जो यह घोषणा करता है कि "मैं तुम्हारे लिए जीऊंगा और तुम्हारे लिए मरुंगा" (विवाह की वाचा के समान)

→ यीशु हमारे लिए मरा ! उसने हमारा स्थान लिया !

- ***परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।***

- **क्यों** ? क्यों यीशु पापियों के लिए मरने को तैयार हो गया?

- हम उसके साथ वाचा में नहीं थे, क्या थे? **हां हम थे** !
  इब्राहीम **और उसकी सन्तानों** के साथ वाचा बान्धने के द्वारा (रोमियों 4:9–18)

- गलातियों 4:28 ***हे भाइयो, हम इसहाक की नाईं प्रतिज्ञा की सन्तान हैं।***

- निर्गमन में, इब्राहीम के साथ की गई वाचा **के कारण** ही फसह के मेमने का लहू था। ठीक उसी प्रकार इब्राहीम के साथ की गई वाचा **के कारण** ही परमेश्वर के मेमने का लहू है। निर्गमन 2:24

रोमियों 5:8–10 अत: इस से बढ़कर, उसके **लहू के द्वारा धर्मी ठहराए जाकर,** हम उसके द्वारा परमेश्वर के प्रकोप से बच जाएंगे। क्योंकि जब हम शत्रु ही थे, हमारा मेल परमेश्वर के साथ उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हुआ तो उससे बढ़कर, अब मेल हो जाने पर हम उसके जीवन के द्वारा उद्धार पाएंगे।

- लहू की वाचा में – दो एक हैं – आप दूसरे के लिए जीते हैं और दूसरे के लिए मरते हैं।

- ***जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।।*** 2 कुरिन्थियों 5:21

- रोमियों 4:7 ***धन्य वे हैं, जिन के अधर्म क्षमा हुए, और जिन के पाप*** ढांपे गए।

- कुलुस्सियों 2:13 ***और उस ने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे*** (मूसा के समान), तब मसीह के साथ तुम्हें भी जीवित किया, ***और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया।***

हल्लेलुय्याह ! परमेश्वर की स्तुति हो ! धन्यवाद करते हैं प्रभु यीशु!

- पहले पति और पत्नी का प्रतीकात्मक

उत्पत्ति 2:21 ***तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी*** नींद ***में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उस ने उसकी एक पसली निकालकर*** उसके स्थान में ***मांस भर दिया।***

हव्वा आदम में से उत्पन्न हुई। और ऐसा होने के द्वारा आदम अपनी दुल्हन को पाने और उसे जीवन देने के लिए अपनी पसली निकाले जाने में लहू बहाने के द्वारा एक बलिदान बना। एक लहू की वाचा। वे एक हुए: ***और आदम ने कहा अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है : सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है।*** उत्पत्ति 2:23

इसी प्रकार से, यीशु की दुल्हन उसी में से आई :

> 1 यूहन्ना 4:6 ***हम परमेश्वर के हैं: जो परमेश्वर को जानता है, वह हमारी सुनता है; जो परमेश्वर को नहीं जानता वह हमारी नही सुनता; इसी प्रकार हम सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा को पहचान लेते हैं।***

इफिसियों 1:4 ***उस ने हमें जगत की उत्पति से पहिले उस में चुन लिया***

यिर्मयाह 1:5 गर्भ में तेरी रचना करने से पूर्व मैं तुझे जानता था।

यूहन्ना 3:3 ***यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, यदि कोई नये सिरे से न जन्में*** (यूनानी में "ऊपर से न जन्में") ***तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।***

गलातियों 4:26 ***पर ऊपर की यरूशलेम स्वतंत्र है, और वह हमारी माता है।***(28) ***हे भाइयो, हम इसहाक की नाईं प्रतिज्ञा की सन्तान हैं।*** इसहाक का स्वाभाविक जन्म परमेश्वर के द्वारा नियुक्त और प्रतिज्ञा किया गया था।

परन्तु बाद में, आदम की पत्नी ने पाप किया और आदम ने उसे न छोड़ने का निर्णय लिया – वे एक थे – और उसे उसके साथ ही मरना था: "***उस ने उस में से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उस ने भी खाया।***" (उत्पत्ति 3:6)

⇒ हव्वा के साथ उसकी मृत्यु उसी के लिए थी और वह उसके लिए उसका उद्धार ठहरा

जिस प्रकार यीशु ने अपनी दुल्हन के विषय में कहा:

मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा। इब्रानियों 13:5

⇒ अपनी दुल्हन के साथ और दुल्हन के लिए यीशु की मृत्यु उसका (हमारा) उद्धार ठहरा।

जिस प्रकार ***मनुष्य का पुत्र, इसलिये नहीं आया कि उस की सेवा टहल*** की ***जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे।।*** मत्ती 20:28

प्रतिदिन आदम और हव्वा अपनी अनाज्ञाकारिता के परिणामों को सहते थे तथा असमय की शारीरिक मृत्यु को भी जो पाप की मज़दूरी थी (रोमियों 6:23)। "***भूमि तेरे कारण शापित है... और*** तू ***अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।***" उत्पत्ति 3:17–19।।

हमारे कार्यों के बावजूद परमेश्वर अपने वचन/अपनी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य है। तथा हमे भी ऐसे अपनी वाचा या प्रतिज्ञाओं के प्रति होना चाहिए।

भजन 89:31–34 ***यदि वे मेरी विधियों का उल्लंघन करें, और मेरी आज्ञाओं को न मानें,*** तो ***मैं उनके अपराध का दण्ड सोंटें से, और उनके अधर्म का दण्ड कोड़ों से दूंगा। परन्तु मैं अपनी करूणा उस पर से*** न ***हटाऊंगा, और न सच्चाई त्यागकर झूठा ठहरूंगा। मैं अपनी वाचा न तोडूंगा, और जो मेरे मुंह से निकल चुका है, उसे न बदलूंगा।***

परन्तु, चूंकि आदम और हव्वा परमेश्वर के थे और वे उसी के द्वारा अस्तित्व में आए, उसने उन्हें दूसरे का जीवन दिया – **लहू** को बहाया – ताकि उनको ढांपने या अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए प्रायश्चित का इन्तेज़ाम करे। परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिए चमड़े के वस्त्र बनाए और उन्हें पहना दिए (उत्पत्ति 3:21)। बलिदानी पशु को मरना पड़ा, **लहू** बहाया गया।

यह प्रतीक है, छाया है, परमेश्वर की ओर ताकते हुए कि वह परमेश्वर का मेमना हमारे लिए देगा जिससे हमारे पाप क्षमा होंगे और हमें अनन्त जीवन प्राप्त होगा। उसने उसको **जो पाप से अज्ञात था, हमारे लिये पाप ठहराया कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।।** 2 कुरिन्थियों 5:21

इसी प्रकार, ''अन्तिम आदम'' यीशु, अपनी गिरी हुई दुल्हन को जीवन देने के लिए अपना लहू बहा कर बलिदान हुआ। यह एक लहू वाचा है। सब एक हैं। यूहन्ना 19:34 ***परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उस में से तुरन्त लहू और पानी निकला।***

इफिसियों 5:25 – 33 ***हे पतियों, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया।*** (26) *कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए।* (27) *और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो।* (28) ***इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है।***

(क्योंकि – **दोनो एक हैं**। हर एक स्त्री और पुरुष विवाह की पहली क्रिया में एक दूसरे के साथ लहू की वाचा में प्रवेश करते हैं, जब योनिच्छद फट जाता है और लहू बहता है, और इस प्रकार वाचा पूर्ण होती है।)

(29) *क्योंकि किसी ने कभी **अपने शरीर से** बैर नहीं रखा बरन उसका पालन–पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है*(30) *इसलिये कि हम उस की देह के अंग हैं।*(31) *इस कारण मनुष्य माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।*(32) ***यह भेद तो बड़ा है;*** *पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं।*(33) *पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने।।*

- जब परीक्षा होती है, वाचा का मनुष्य – भाग खड़ा होता है !

उत्पत्ति 39:7 *इन बातों के पश्चात् ऐसा हुआ, कि उसके स्वामी की पत्नी ने यूसुफ की ओर आंख लगाई; और कहा, मेरे साथ सो।*(8) *पर **उस ने अस्वीकार कर** दिया* … (9) ***मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्योंकर बनूं ?*** (12) *तब उस स्त्री ने उसका वस्त्र पकड़ कर कहा, मेरे साथ सो, पर वह अपना वस्त्र उसके हाथ में छोड़कर भागा, और बाहर निकल गया।*

इब्रानियों 13:4 विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।

मत्ती 5:27–28 तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, कि **व्यभिचार न करना**। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।

- शरीर की अभिलाषा हमारे अन्दर है। परन्तु इसे कार्य उत्पन्न नहीं करना चाहिए।
- किसी दूसरे को हानि, क्षति या दूषित नहीं करना चाहिए
- शरीर की अभिलाषा हमारे अन्दर है, परन्तु यह कभी हमें नियंत्रित न करे

- प्रगति इस प्रकार है:

याकूब 1:14 –16 परन्तु प्रत्येक व्यक्ति **अपनी ही अभिलाषा में खिंचकर,** और **फंसकर** परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनता है और **पाप** हो जाता है तो **मृत्यु** को उत्पन्न करता है।

1 यूहन्ना 2:16 क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की **अभिलाषा,** और आंखों की अभिलाषा और जीविका का **घमण्ड,** वह पिता की **ओर से नहीं,** परन्तु संसार ही की **ओर से है**।

1 पतरस 2:11 हे प्रियों मैं तुम से बिनती करता हूं, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो।

आप अशलील चित्रों, विवरणों या किसी भी प्रकार की अशलीलता से भागें और उससे दूर रहें। यह घातक है, दुष्ट शत्रु है।

1 कुरिन्थियों 6:12–20

सब वस्तुएं मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुएं लाभ की नहीं, सब वस्तुएं मेरे लिये उचित हैं, परन्तु **मैं किसी बात के आधीन न हूंगा ।** (13) भोजन पेट के लिये, और पेट भोजन के लिये है, परन्तु परमेश्वर इस को और उस को दोनों को नाश करेगा, परन्तु **देह व्यभिचार के लिये नहीं,** व**रन प्रभु के लिये;** और प्रभु देह के लिये है।(14) और परमेश्वर ने अपनी सामर्थ से प्रभु को जिलाया, और हमें भी जिलाएगा।(15) क्या तुम नहीं जानते, कि **तुम्हारी देह मसीह के** (वाचा) **अंग** हैं? सो क्या मैं मसीह के अंग लेकर उन्हें वेश्या के अंग बनाऊं? (विवाह वाचा का तोड़ना) कदापि नहीं।

(16) क्या तुम नहीं जानते, कि जो कोई वेश्या से संगति करता है, वह उसके साथ एक तन हो जाता है क्योंकि वह कहता है, कि **वे दोनों एक तन होंगे।** (17) और जो प्रभु की संगति में रहता है, वह **उसके साथ एक आत्मा हो जाता है।** (18) **व्यभिचार से बचे** रहोः जितने और पाप मनुष्य करता है, वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करनेवाला अपनी ही देह के विरूद्ध पाप करता है। (19) क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो ? (20) क्योंकि तुम दाम देकर मोल लिये गए **हो,** इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।।

दाऊद ने अपना पाठ सीख लिया !

भजन संहिता 101:3 **मैं किसी** ओछे **काम पर चित्त न लगाऊंगा।**

भजन संहिता 101:3 मैं अशलील और घिनौनी चीज़ की ओर देखने से इनकार कर दूंगा। मुझे सारी कुटिल चालबाज़ियों से घृणा है। उन सब से मुझे कुछ लेना देना नहीं है।

नीतिवचन 3:7 अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और **बुराई से अलग रहना।**

1 थिस्सलुनीकियों 5:22 **सब प्रकार की बुराई से बचे रहो।।**

2 तीमुथियुस 2:22 **जवानी की अभिलाषाओं से भाग;** और जो **शुद्ध मन** से प्रभु का नाम लेते हैं, उन के साथ धर्म, और विश्वास, और प्रेम, और मेल–मिलाप का पीछा कर।

भजन संहिता 15:1–4 हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा ? वह जो खराई से चलता और धर्म के काम करता है, और हृदय से सच बोलता है; जो अपनी जीभ से निन्दा नहीं करता, और न अपने मित्र की बुराई करता, और न अपने पडोसी की निन्दा सुनता है; वह जिसकी दृष्टि में निकम्मा मनुष्य तुच्छ है, और जो यहोवा के डरवैयों का आदर करता है, जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे हानि उठाना पडे। (न्यायियों 11:35)

सदगुण – नैतिक श्रेष्ठता और आत्मा की शुद्धता, जिसकी चमक जब मैं परमेश्वर के वचन का पालन करता हूं फैलती है।

"... और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्‌गुण, और सद्‌गुण पर समझ।" 2 पतरस 1:5

वाचा का सम्बन्ध जीना

1 शमूएल 18:1–8 दाऊद और योनातान

- योनातान का मन दाऊद के मन के साथ "लग" गया था। (पद 1)।

"लगना" या "जड़ना" शब्द नहेम्याह 4:6 में इस्तेमाल हुआ है जहां पर उसका जिक्र दिवार के संदर्भ में हुआ जिसे इस प्रकार बनाया गया कि वहां कोई फासला/गुंजाइश/खाली स्थान नहीं रहा कि शत्रु भीतर प्रवेश कर पाए।

  - इफिसियों 4:27 और न शैतान को अवसर दो।
  - वाचा में, दो एक होते हैं।

हमारा हृदय अपनी पत्नी के साथ और भी कितना अधिक जुड़ा रहना चाहिए जिसके साथ हम “विशेष” लहू की वाचा में बन्धे हैं?

  - आप अपनी पत्नी के साथ कितनी अच्छी तरह "जुड़े" हैं?
  - क्या आप श्रंखला में कमज़ोर–कड़ी हैं?

- यह कहा गया कि योनातान दाऊद से अपने समान प्रेम करता था। (पद 1 और 3)
  - जो पति अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है।

    इफिसियों 5:28–29
  - यूहन्ना 13:34 मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दुसरे से प्रेम रखो। (यूहन्ना 13:34; 15:12; 15:17; रोमियों 13:8; 1 थिस्स 4:9; 1 पतरस 1:22; 1यूहन्ना 3:11; 3:23; 4:7; 4:11; 4:12; 2 यूहन्ना 5)
  - प्रेम केवल एक भावना नहीं है। प्रेम सबसे प्रथम और महत्वपूर्ण वचनबद्धता है।

लहू की वाचा

निष्ठा – जिन लोगों की सेवा के लिए परमेश्वर ने मुझे बुलाया है, उनके प्रति अपनी वचनबद्धता की पुष्टि के लिए अपनी कठिन परिस्थिति का प्रयोग करना। इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे। यूहन्ना 15:13

- अपने आप का मुल्यांकन करें – क्या कठिनाईयां आपकी वचनबद्धता की पुष्टि करती है या आपके वचनबद्धता के लिए कमज़ोरी बन जाती है ?

- प्रेम देता है – अभिलाषाएं लेती है। सच्चा प्रेम, वाचा की वचनबद्धता की ओर अगुवाई करता है।

- मसीह की देह में किसी भी तरह की गलतफ़हमी, ईर्ष्या, संदेह इत्यादि की कोई भी गुंजाइश नहीं होनी चाहिए, जहां शत्रु भीतर घुस आए और विभाजन ले आए।
  - ताकि शैतान हमसे कोई लाभ न उठा सके। 2 कुरिन्थियों 2:11

- योनातान को इस्राएल का वह व्यक्ति होना चाहिए था जो दाऊद से ईर्ष्या करता, क्योंकि वह योनातान के लिए अपने पिता शाऊल का उत्तराधिकारी होने और इस्राएल के राजा बनने में खतरा था। योनातान एक व्यक्ति था। परमेश्वर का जन।

  - आपके जीवन के किन क्षेत्र या क्षेत्रों में ईर्ष्या प्रवेश करती है? होती
  - याकूब 3:16 इसलिये कि जहां **डाह** और स्वार्थी आकांशा होती है, वहां **बखेड़ा** और हर प्रकार का **दुष्कर्म** भी होता है।
  - फिलिप्पियों 2:3 **विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो** पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।

1 शमूएल 18:4 और योनातान ने अपना बागा जो वह स्वयं पहिने था **उतारकर** अपने वस्त्र समेत **दाऊद को दे दिया**, वरन अपनी तलवार और धनुष और कटिबन्ध भी उसको दे दिए।

- योनातान कह रहा था :
  - "मै तुम्हें अपने से अधिक महत्वपूर्ण समझता हूं"
  - "मैं तुम्हें सफल बनाने के लिए जीता हूं"
  - "जो कुछ मेरा है वो सब तुम्हारा है"
  - "मै तुम्हारे साथ खड़ा हूंगा और तुम्हारे साथ और तुम्हारे लिए लड़ूंगा।"
  - वाचा में आप एक दूसरों के लिए मध्यस्थता करते हैं (1 शमूएल 19:1–6) तथा
  - जब कोई एक गिर जाए तो उसकी उठने में सहायता करते हैं (गलातियों 6:1–2)

- वाचा के चिन्ह के रुप में , योनातान ने **अपना शाही बागा उतारकर** दाऊद को पहिना दिया (पद 4)। यह योनातान की इच्छा का प्रतीक था कि वह अपने **पदवी से उतरना** चाहता है – इस्राएल का अगला राजा – और वो पदवी वह दाऊद को देना चाहता है। और यह भी कि वह सेवक रहेगा।

- वाचा में हम वो सब करते हैं जिससे कि दूसरों को सफल होने में सहायता मिले।

- रोमियों 12:10 भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।

- हमें अपने आप के लिए मरना है। हम सच्चाई और उत्सुकता से यह कामना करते हैं कि हमारी पत्नी और हमारे भाई बड़े और ऊंचाईयों पर पहुंचें तथा हम से अधिक सम्मान मिले। यह सम्भव हो, इसके लिए हमें काम/सेवा करनी है।

- पति अपनी पत्नी की सेवा करते हुए और सम्मान देते हुए अगुवाई करे। मत्ती 23:11 जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने।

विश्वसनीय – उस सबको पूरा करना जिसको करने का मैने संकल्प (प्रतिज्ञा) लिया है, चाहे इसके लिए मुझे अनापेक्षित बलिदान भी देना पड़े (मेरी पत्नी या दूसरो का नहीं)।

भजन संहिता 15:4 जो शपथ खाकर बदलता नहीं चाहे हानि उठाना पडे।

गिनती 30:2 जब कोई पुरुष यहोवा की मन्नत माने, वा अपने आप को वाचा से बान्धने के लिये शपथ खाए, तो वह अपना वचन न टाले; जो कुछ उसके मुंह से निकला हो उसके अनुसार वह करे।

व्यवस्थाविवरण 23:21 जब तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मन्नत माने, तो उसके पूरी करने में विलम्ब न करना; क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा उसे निश्चय तुझ से ले लेगा, और विलम्ब करने से तू पापी ठहरेगा।

- यदि अवश्यक हो तो जो वाचा के साथ में हैं उनकी **गलतियां ढांपने** के लिए हमें अपना **चोगा** लेना है। हमें अपनी पत्नी, अपने भाई, अपनी बहन को दूसरों की दृष्टि में आदरणीय बनाना है।
    - "हमारा चोगा" क्या है? हमारा दृष्टिकोण (किसी विषय पर), हमारी प्रतिष्ठा, वो सभी बातें जिससे हम दूसरों की नज़रों में अच्छे लगते हैं।
- अपनी आत्म– रक्षा के समस्त **हथियारों** को त्याग कर हमें केवल उनकी, जो वाचा में हमारे साथ है, रक्षा के लिए इस्तेमाल करना चाहिए।

नीतिवचन 10:12 बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं, परन्तु प्रेम सब अपराधों कों ढांप देता है

1 पतरस 4:8 और सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम अनेक पापों को **ढांप** देता है।

- वाचा में मनुष्यों / भाईयों का व्यवहार ऐसा होता है

अपनी ज़िद को मारे बिना ऐसी वाचा में प्रवेश करना असम्भव है। हर एक विवाह और विश्वासीयों की बहुत सी कलीसियाओं में, अधिकतर समस्याएं जो चोट पहुंचाती हैं इसलिए आती हैं, क्योंकि विश्वासी वाचा में एक दूसरे के साथ नहीं रह रहे। हर एक जन अपना स्वार्थ देख रहा है। इसका अन्त परिणाम यह है कि शैतान को खुला द्वार मिल जाता है। वाचा की दिवार में खाली जगह।

यिर्मयाह 6:13 क्योंकि उनमें छोटे से लेकर बड़े तक **सब के सब लालची** हैं, और क्या भविष्यवक्ता क्या याजक **सब के सब छल से काम करते हैं।**

हर एक "अपना चोगा" रखता है, और यदि सम्भव हो तो दूसरे का "चोगा" भी छीन लें, तथा अपने समस्त हथियारों को अपने स्तर को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करते हैं।

- उदाहरण : लूका 10:30–37 अच्छा सामरी

1 पतरस 5:8 तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाई इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए। वो लोगों का इस्तेमाल करता है।

यूहन्ना 10:10 चोर ... केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है।

इफिसियों 4:27 शैतान को अवसर न दो।

2 कुरिन्थियों 2:11 शैतान का हम पर दांव न चले, क्योंकि हम उस की युक्तियों से अनजान नहीं।

उत्तर

लूका 9:23 उस ने सब से कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो **अपने आप से इन्कार करे** और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।

लूका 14:27 और जो कोई अपना क्रूस न उठाए; और मेरे पीछे न आए; वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता।

हमें गलातियों 2:20 को कंठस्थ करके, उसके अनुसार जीना है

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं (निश्चित कर्मवाच्य सूचक भूत काल में हो चुका (जब मसीह क्रूसित हुआ) परन्तु वर्तमान में निरन्तर होने वाले परिणामों के साथ), और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से **प्रेम किया**, और **मेरे लिये अपने आप को दे दिया।**

- "मरे हुए व्यक्ति" की क्या इच्छाएं होती है?
- क्या मरा हुआ व्यक्ति लाभ के लिए लालच करता है?
- क्या वह अपनी रक्षा करता है? अपनी प्रतिष्ठा के लिए लड़ता है? या तरक्की के लिए?

- यह वाचा है – व्यक्तिगत रीति से मैं अपनी स्वार्थपूर्ण अभिलाषाओं के लिए मर चुका हूं और अब मैं दूसरों के लिए जीवित हूं।

इब्रानियों 9:16–19 क्योंकि जहां वाचा बान्धी गई है वहां वाचा बान्धनेवाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। (17) क्योंकि ऐसी वाचा **मरने पर** पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धनेवाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती। (18) इसी लिये पहली वाचा भी बिना लहू के नहीं बान्धी गई।

हमारे लिए आवश्यक है कि हम वाचा को समझें और पूरी रीति से उस सम्बन्ध के अनुसार जीएं :

- योनातान ने अपने हथियार, अपनी तलवार, अपना धनुष और अपना कटिबन्ध दाऊद को दे दिया।
  - हमें भी **हर उस हथियार को** जिसके द्वारा हम अपनी पत्नी, अपने भाईयों, अपनी बहनों को किसी भी तरह नुकसान पहुंचा सकते हैं डाल देना चाहिए।
  - एक हथियार जिससे सबसे ज़्यादा नुकसान पहुंचाया जाता है, **"जीभ"** है।

हमें इस हथियार को डाल देना है और कभी भी :

- किसी के बारे में या किसी के लिए बुरा नहीं बोलना
- व्यर्थ बातें नहीं करनी
- या अपना बचाव नहीं करना

याकूब 3:3–10 जब हम अपने वश में करने के लिये घोड़ों के मुंह में लगाम लगाते हैं, तो हम उन की सारी देह को भी फेर सकते हैं [इसका क्या अर्थ है?]।(4) देखो, जहाज भी, यद्यपि ऐसे बड़े होते हैं, और प्रचण्ड वायु से चलाए जाते हैं, तौभी एक छोटी सी पतवार के द्वारा मांझी की इच्छा के अनुसार घुमाए जाते हैं।(5) वैसे ही **जीभ** भी एक छोटा सा अंग है और बड़ी बडी डींगे मारती है: देखो, थोड़ी सी आग से कितने बड़े बन में आग लग जाती है।(6) जीभ भी एक आग है: जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है और सारी देह पर **कलंक** लगाती है, और जीवनगति में **आग लगा देती है** और नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है।

(7) क्योंकि हर प्रकार के वन–पशु, पक्षी, और रेंगनेवाले जन्तु और जलचर तो मनुष्य जाति के वश में हो सकते हैं और हो भी गए हैं। (8) पर **जीभ** को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता; वह एक ऐसी बला है जो कभी रूकती ही नहीं; वह प्राण नाशक विष से भरी हुई है। (9) इसी से हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं; और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए हैं शाप देते हैं। (10) एक ही मुंह से धन्यवाद और शाप दोनों निकलते हैं। हे मेरे भाइयों, ऐसा नही होना चाहिए।

- तीन उदाहरण – घोड़ों के मुंह , जहाज़ , वन की आग।
- क्या इस समस्या को बहुत ध्यान देने की ज़रुरत है?
- क्या हम जीभ को वश में कर सकते हैं? केवल तभी जब हम मरे हो! गलातियों 2:20

याकूब 4:1–4 तुम में लड़ाइयां और झगड़े कहां से आ गए ? (इसके बाद उत्तर आता है) क्या उन सुख–विलासों से नहीं (इच्छाएं, अभिलाषाएं, वासना में आनन्द, आत्मकेन्द्रित होना) जो तुम्हारे अंगों में लड़ते–भिड़ते हैं ? (2) तुम लालसा रखते हो (तरसते, लालच, इच्छा), और तुम्हें मिलता नहीं; तुम हत्या और डाह करते हो, ओर कुछ प्राप्त नहीं कर सकते; तुम झगड़ते और लड़ते हो; तुम्हें इसलिये नहीं मिलता, कि मांगते नहीं। (3) तुम मांगते हो और पाते नहीं, इसलिये कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपने भोग विलास में उड़ा दो। (4) हे व्यभिचारिणियों (वाचा तोड़ने वाली), क्या तुम नहीं जानतीं, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? सो जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।

- हम ऐसी किस चीज़ की लालसा, लालच या इच्छा रखते हैं जिसके कारण लड़ाई और झगड़ें होते हैं?
- समस्या : आत्म संयम बनाम असंयम

  गलातियों 5:22–26 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और **संयम** हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं। और जो मसीह यीशु के हैं, उन्हों ने शरीर को उस की **लालसाओं और अभिलाषों** समेत **क्रूस पर चढ़ा दिया है**। यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो **आत्मा के अनुसार चलें** भी। हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें।

लूका 9:23–24 यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा।

याकूब 1:19 हर एक मनुष्य **सुनने** के लिये **तत्पर** और **बोलने** में **धीरे** और क्रोध में **धीमा** हो।

याकूब 1:26 यदि कोई अपने आप को भक्त समझे, और अपनी **जीभ पर लगाम** न दे, पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उस की भक्ति व्यर्थ है।

- यीशु का उदाहरण – यीशु ने अपनी जीभ को वश में कर रखा था।

1 पतरस 2:21–24 और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। (22) न तो उस ने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। (23) **वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था,** पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। (24) वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएंः उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।

यह एक कूंजी है – जिससे आप अपनी पत्नी या किसी अन्य के साथ हुई बहस में शान्ति ला सकते हैं।

- कभी फिर के वाद–विवाद करने या अपने को बचाने का प्रयत्न न करें।
- अपने आप से पहले बात–चीत करें। अपने क्रूस को उठाएं। गलातियों 2:20 से लिया गया

नीतिवचन 18:21 **जीभ के वश में मृत्यु** और **जीवन** दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।

कुलुस्सियों 4:6 तुम्हारा वचन सदा **अनुग्रह** सहित और सलोना हो, कि तुम्हें ह**र मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना** आ जाए।

इफिसियों 4:29–32 **कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले**, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो **उन्नति के लिये** उत्तम हो, ताकि उस से सुननेवालों पर अनुग्रह हो। और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो **... सब प्रकार की कड़वाहट** और **प्रकोप** और **क्रोध,** और **कलह,** और **निन्दा** सब **बैरभाव** समेत तुम से **दूर की जाए।** और एक दूसरे पर कृपालन, और करूणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।।

निष्ठा – जिन लोगों की सेवा के लिए परमेश्वर ने मुझे बुलाया है, उनके प्रति अपनी वचनबद्धता की पुष्टि के लिए अपनी कठिन परिस्थिति का प्रयोग करना।

"इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।" यूहन्ना 15:13

किसी और ने हमारे लिए उसका शाही वस्त्र उतार लिया !

फिलिप्पियों 2:2–11 स्वार्थ और मिथ्याभिमान [अपने आप की योग्यताओं और महत्व के प्रति असंगत उच्च विचार (प्रयायवाचीः अहंकार)। सही स्वाभिमान को न्याय संगत मान सकते हैं, 1 कुरि 4:7; 15:10] से कोई काम न करो **पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।**(4) हर एक अपनी ही हित की नहीं, बरन दूसरों की हित की भी चिन्ता करे।(5) जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था **वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।**(6) जिस ने परमेश्वर के **स्वरूप** में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।(7) वरन अपने आप को ऐसा **शून्य** कर दिया (खाली कर दिया), और **दास का स्वरूप** धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।(8) और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को **दीन किया,** और यहां तक **आज्ञाकारी रहा**, कि मृत्यु, हां, क्रूस की **मृत्यु भी सह ली**।(9) इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है।(10) कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।(11) और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।।

इफिसियों 5:25–33 हे पतियों, अपनी अपनी पत्नी से **प्रेम रखो, जैसा** मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके [1] अपने आप को उसके लिये दे दिया।(26) कि [2] उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से **शुद्ध करके पवित्र बनाए**।(27) और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु हो, बरन पवित्र और निर्दोष हो।(28) इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है।(29) क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन उसका पालन–पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। (30) इसलिये कि हम उस की देह के अंग हैं।(31) **इस कारण मनुष्य माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे**।(32) यह भेद तो बड़ा है; पर मैं यहां मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं। (33) पर तुम में से हर एक अपनी **पत्नी से अपने समान प्रेम रखे**, और पत्नी भी अपने पति का **भय** माने।।

[1] यीशु मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिये अपने आप को दे दिया या जैसा फिलिप्पियों 2:7–8 में लिखा है "अपने आप को शून्य कर दिया ... दीन किया और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु वरन् क्रूस की मृत्यु भी सह ली।"

- आज्ञाकारिता हमें किस प्रकार से दीन करता है?
    - मैं कहता हूं : "हे प्रभु, मेरी इच्छा नहीं परन्तु तेरी इच्छा"
    - मैं अपनी प्रतिष्ठा /अधिकार / शक्ति / आज्ञा मानने के लिए महिमा, छोड़ रहा हूं।
    - यह नम्रता है: अपने व्यक्तिगत अधिकारों और उम्मीदों को परमेश्वर के लिए समर्पित कर देना। 1 पतरस 2:21–23

[2] '' कि'' या, ''शून्य'' इस बात को पूर्ण करता है:

- ''पवित्र बनाए'', इसका अर्थ उसे विशेष जान कर अलग कर देना।
- ''शुद्ध करने'' का अर्थ, उसके सारे मानसिक और भावनात्मक घावों से उसको चंगा करके उसे शानदार बना देना।

प्रत्येक व्यक्ति के पास भावात्मक प्याला होता है या हृदय में क्षेत्र होता है जिसमें वो अपने सम्पूर्ण जीवन के दर्द, असवीकृतियों, या प्रेम को भरे रखते हैं।

एक पति को पवित्र आत्मा की चंगाई के सामर्थ का स्रोत होना चाहिए, जिससे वह अपनी पत्नी के हृदय के दर्द, अस्वीकृतियों को निकाल कर उसके बदले में उसमें प्रेम और स्वीकृति भर दे।

वह यह काम अपने कार्यों, अपने व्यवहार, अपने शब्दों और स्नेहपूर्ण देखभाल द्वारा करे, जैसे यीशु ने किया।

जिस पत्नी को इस प्रकार प्रेम किया जाए, वो कभी छोड़ेगी नहीं और न ही बेवफाई करेगी।

हमारे बच्चों को भी अपने पिता के प्रेम भरे शब्दों, कार्यों, व्यवहार और पवित्र आलिंगन से अपने भावात्मक खालीपन भरने की ज़रुरत है।

मुझे एक सत्य घटना बताई गई:

एक प्रताड़ित महिला ने कहा : जब मै छोटी लड़की थी, मेरे परिवार के कार्य बहुत बुरे थे। मैने इन्तज़ार किया, सपने देखे कि कोई मुझे प्यार करेगा। एक दिन वास्तव में मैंने एक मेंढक को पकड़ कर अपनी उम्मीद के विरुद्ध इस उम्मीद में चूम लिया कि शायद एक दिन मेरे समीप एक राजकुमार होगा जो मुझे थामेगा और मुझे प्यार करेगा।